सम्पादक की कलम से

शिक्षा ही अंधेरा से प्रकाशवान

प्रत्येक मानव जीवन में अंधेरा जब तक बना रहता तब–तक शिक्षित नहीं हो यदि शिक्षा प्राप्त कर लेवें, तो जीवन का अंधेरा ही समाप्त हो सकता है। और यह केवल करने सुनने की बात नहीं है यह तो वास्तविक ही है कि जो व्यक्ति शिक्षित है, प्रशिक्षित है उसके जीवन में प्रकाश ही प्रकाश वह जिधर चाहे उधर उस क्षेत्र का चयन कर लेवें व अपना एवं अपने परिवार जनों का भविष्य उज्जवल बनाकर राष्ट्र की उन्नति में भागीदारी कर सकता हैं । जो शिक्षित हुए है उनके उदाहरण जन जाहीर ही है। और जो अशिक्षित अर्धशिक्षित है उनका जीवन भी सामने है। हमारी पुरानी पीढ़ी भले ही शिक्षित नहीं हो सकी क्योंकि उस समय शिक्षा पाने का अवसर ही नहीं था, इस कारण उन्हें दोष नहीं दे सकते है। वे तो जैसे तैसे अपनी व परिवार की आजीविका चलाकर मेहनत मजदूरी करके पूजा–पाठ भक्ति अंधश्रद्धा, आस्था, आत्मा, परमात्मा, पाप–पुण्य की कहानियां कथा सुनकर समझकर जैसे–तैसे अपना जीवन यापन कर सके, किन्तु अब तो देश का प्रत्येक नागरिक आजाद है, शिक्षण संस्थाऐ जगह–जगह है, कोई शिक्षा से वंचित रखने की बात भी नहीं कर सकता है। ऐसे में शिक्षा पाकर प्रकाश वान बन सकते है।

यह सबको पता है कि आजादी के पहले जो शिक्षिण व्यवस्था थी वह सहज सुलभ थी ही नहीं, उस समय तक तो हमारे पुरखे अशिक्षित अर्धशिक्षित रहकर जीवन यापन करते रहे, अपनी कृषि व्यापार उद्योग मजदूरी करते हुए अपना समय बिताया किन्तु अब तो शिक्षा पाने के सभी द्वारा खुले है, सभी प्रकार के अवसर है। पुश्तैनी कामों के लिए अब अनेक प्रकार के साधन संसाधन उपकरण ज्ञान विज्ञान से अलकृत है ऐसे में आधुनिक कृषि–व्यापार उद्योग धन्धा के भी अवसर सुलभ है। और यदि शिक्षित व्यक्ति अपने पुश्तैनी कामों को ही आदर्श रूप से करने लगे तो आगे बढ़ने के अनेक अवसर है। ऐसे में अब यदि अशिक्षित या अर्धशिक्षित ही बने रहे तो इसके लिए स्वंय और परिवार के मुखिया की नासमझी ही माना जा सकता है कि हम अब भी शिक्षित नहीं हो पा रहे है।

अब देखिये केन्द्रिय एवं राज्यों की सरकार भी अपने नागरिकों का शिक्षित करने के लिए बजट प्रावधान करती है। कोई अधिक या कम किन्तु शिक्षा का बजट तो रखना ही होता है। और इस बजट के अनुसार शिक्षा पर व्यय करना ही पड़ता है, इसके लिए शिक्षण मंत्रालय विभागध्यक्ष आदि की व्यवस्था सरकार के बजट से हो रही है। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु छात्रवृत्तियां, युनिफार्म, दोपहर भोजन, पाठ्य सामग्रियां, प्रशिक्षण संस्थान, प्रोत्साहन योजनाएं यानि अनेक प्रकार से सरकारी मद से प्रशिक्षित करने की व्यवस्था विद्यमान है, प्रचार प्रसार भी बहुत होता है। सभी प्रकार को शहरों से लेकर ग्रामीण स्तर तक शिक्षित करने की व्यवस्था विद्यमान है फिर भी हमारी आबादी लगभग 30 प्रतिशत् अब तक अशिक्षित है। इसका कारण तो खोजना ही होगा। और शत् प्रतिशत् शिक्षित करने हेतृ अभियान चलाना होगा।

वर्तमान में शिक्षा के लिए प्रायः दो प्रकार की व्यवस्था है एक तो सरकारी दुसरी निजी शिक्षण संस्थान नीजि शिक्षण संस्थानों को प्रोत्साहित करने हेतु शासन के बजट से राशि अनुदान–दान आदि के रूप में प्रदान की जाती है। शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के केन्द्र खुले है। महाविद्यालय विश्वविद्यालयों की भी अब कमी नहीं हैं, ऐसे में शिक्षा का वातावरण तो बना हुआ है फिर भी 30 प्रति्शत अशिक्षित रहना आश्चर्यजनक है।

हमारी सरकार एवं शिक्षा नीतिकार भी शिक्षा का ढिंढोरा तो खूब पीटती रहती है, किन्तु उपाय करने की ठोस योजना नहीं बनाती। शायद यह नीति हो कि यदि सभी नागरिक शिक्षित हो जांयेगे तो सब बाबू अफसर ही बनने हेतु सब कुछ करेगे, फिर उत्पादन निमार्ण में श्रमिक कहां से लायेगें। घरेलु नौकरानी तो कोई मिलेगी ही नहीं शिक्षित होकर बड़े से बड़ी हैसियत बनाने में जुट जायेगी यही कारण लगता है,कि शिक्षा नीतिकार व सरकार सबको वास्तव में शिक्षित–प्रशिक्षित करना ही नहीं चाहती है।

हाँ हम यह मान सकते है कि गुणवत्ता युक्ता शिक्षा की व्यवस्था अभी तक सुचारू रूप से स्थापित नही तो पा रही है। क्योंकि प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है, शिक्षा का बजट भी कम रखा जाता है, अन्य मदो की प्रथामिकतायें अलग है। फिर भी अब सभी परिवार जन अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते है। सरकारे भी दिल्ली सरकार की भांति शिक्षा बजट को कम से कम दो अंको तक तो बढ़ा सकती है। केजरीवाल सरकार ने तो लगभग 25 प्रतिशत् बजट प्रावधान रखने की बात कही गई है। भाजपा अन्य दलो की सरकार भी विचार करे व कम से कम दो अंको का शिक्षा बजट प्रावधान करें ताकि ''सर्वशिक्षा अभियान'' सफल हो सके।

नई सरकार से अपेक्षा है कि वह अपने नागरिकों को शतप्रतिशत् शिक्षित करने प्रशिक्षित करने हेतु बजट प्रावधान करेगी और शिक्षा को प्राथमिकता देकर उपाय व कार्य भी करेगी।

यदि सभी नागरिकों को शिक्षित रखना है तो शिक्षा के लिये अंधेरे से प्रकाश की और आगे बढ़ने हेतु पहल करें।

– रामनारायण चौहान

अब्राहम लिंकन के जीवन की संक्षिप्त घटना

अब्राहम लिंकन बचपन में जानवर चरा रहे थे। उन्होंने देखा कि नीग्रो की बहू–बेटियों के साथ वहाँ का शासक, जमीन्दार, जार, कुलांक, पूंजीपति अपनी हवस की पूर्ति करता है और उससे जो बच्चे जन्म लेते हैं उसे सरेआम बाजारों में टमाटर की तरह बेच देता है।

यह दृश्य लिंकन की छाती पर हथौड़े की भाँति वार करता है।

जानवर चराने के क्रम में वह शपथ लेता है, प्रतिज्ञा करता है, कसमें खाता है कि 'अगर मैं इस धरती पर जिन्दा रहा तो एक दिन अमेरिका की धरती से दास

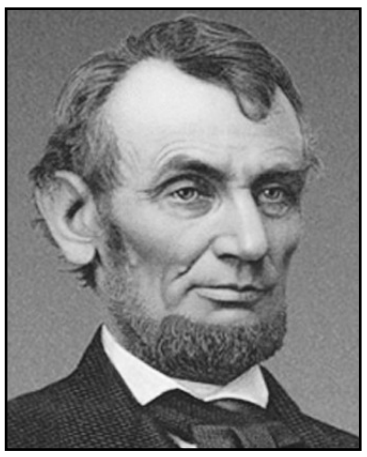

प्रथा (गुलामी) को नेस्तनाबूद कर ही दम लूँगा।'

अमेरिका की राजनीति करवट लेती है, व्यवस्था बदलती है और एक दिन वही जानवर चराने वाला लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर पहुँच जाता है। जैसे ही राष्ट्रपति पद का शपथ लेता है, वैसे ही वह 40 लाख नीग्रो लोगों को गुलामी से मुक्ति की घोषणा करता है ।

मतलब जो निरादर और दरिद्रता की चोट से चोटिल है, वही निरादर और दरिद्रता से मुक्ति की मुक्कमिल लड़ाई वही लड़ सकता है।

अपनी लड़ाई आपको खुद लड़नी होगी अपने लोगों के रहनुमा आप खुद बनिए जो शासक जाति से आया है वह आपके शोषित होने का दर्द क्या जानेगा।

वैसाख पूर्णिमा (त्रिविध पावन पर्व) बुद्ध जयन्ती वैज्ञानिक धर्म के संस्थापक तथागत बुद्ध

हम सब जानते हैं कि संसार में द्वन्द (क्नंसपजल) है। भला–बुरा, अमीर–गरीब, सुख–दुख, शोषित–शोषक, परन्तु सच्चाई तो यह है कि अस्तित्व त्रिसत्तात्मक (ज्तपदपजल) हैं वे तीनों शक्तियां हैं, धनात्मक, ऋणत्मक एवं उदासीन।

इसी को वैज्ञानिकों ने अणु को तोड़कर पाया कि तत्व में मूलतः प्रोटान धनात्मक), इलेक्ट्रान (ऋणात्मक), न्यूट्रान (शून्य आवेशित) तीन प्रकार के कण पाये जाते हैं। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए हम जब शूद्र हितैशी महा करुणावान, महानायकों, महान, समाज सुधारकों की गणना करते हैं तो तमाम नाम मस्तिष्क में आते हैं जैसे तथागत बुद्ध, महावीर स्वामी, सम्राट अशोक, कबीर, सन्त रविदास, नानक, ज्योतिबा फूले, पेरियार रामासामी, शाहूजी महाराज, सन्त गाडगे, डा0 अम्बेडकर, स्वामी अछूतानन्द, मान्यवर काशीराम आदि, परन्तु इनमें तीन प्रमुख हैं, आदि समाज सुधारक तथागत बुद्ध, मध्य समाज सुधारक एवं शिक्षा की प्रथम ज्योति जलाने वाले महामना ज्योतिबा फूले एवं अन्तिम समाज सुधारक डा0 बी0आर0 अम्बेडकर जिनकी कि चर्चा अप्रैल माह में की जा चुकी है।

तथागत बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था उनके पिता कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन और माँ महामाया थीं। 563 ई0पू0 पूर्व में वैसाख पूर्णिमा को उनका जन्म हुआ था। वे बचपन से ही करुणा की गंगोत्री थे। 16 वर्ष की उम्र में उनका, विवाह यशोधरा नामक लड़की से हुआ था, 29 वर्ष की आयु में राहुल नामक पुत्र पैदा हुआ। वे अति संवेदनशील थे। एक दिन महल से वन महोत्सव कार्यक्रम में जाते हुए एक वृद्ध, एक शव को देखकर वे इतने दुखी हुये कि घर वापस लौट आये और रात में चन्ना सारथी के साथ घोड़े पर अनोमा नदी तक ले जाकर उसे वापस कर दिया और स्वयं पैदल ज्ञान प्राप्ति के लिए 6 वर्ष तक प्रयास करते रहे।

अन्त में 35 वर्ष की आयु में बोधिगया निरंजना नदी के निकट पीपल वृक्ष के नीचे उन्हें वैसाख पूर्णिमा को ज्ञान प्राप्त हुआ था, 45 वर्ष के लोगों को दुख मुक्ति के लिये समझाते रहे अन्त में 483 ईसा पूर्व वैशाख पूर्णिमा को उनका निधन कुशीनगर में हो गया था। वैशाख पूर्णिमा के दिन जन्म, वैसाख पूर्णिमा को ही ज्ञान प्राप्ति एवं 483 ई0पू0 बैसाख पूर्णिमा को परिनिर्वाण (निधन) के कारण ही समस्त 37 बौद्ध राष्ट्रों में इस वैसाख पूर्णिमा को त्रिविध पावन पर्व कहते हैं।

तथागत बुद्ध की विशेष शिक्षायें रू1. संसार में बिना कारण कुछ भी नहीं होता। यह विचार ही वैज्ञानिकता का आधार है। 2. दुख का कारण हमारी अधिक इच्छायें हैं। 3. जीवन में मध्य मार्ग पर चलकर ही कोई प्रसन्न रह सकता है। 4. जीवन में शीलों का पालन कर नैतिक बने । 5. अपने अनुभव से किसी बात को जानें तभी मानें इस कारण बौद्ध धर्म में अन्धविश्वास पाखण्ड नहीं है तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भरपूर है।

महामना फूले की विशेष शिक्षायें रू1. समस्त दुख का कारण अविद्या (शिक्षित न होना) है। 2. स्त्री शिक्षा की महती आवश्यकता है क्योंकि बच्चों का पालन पोषण पर माँ का प्रभाव सर्वाधिक है। 3. गुलामी पुस्तक लिखकर पौराणिक देवी देवताओं का खंडन किया है। 4. सत्यशोधक समाज की स्थापना कर सामाजिक कुरीतियों को समाप्त किया है। 5. जल संरक्षण तथा किसानों की आर्थिक दशा में सुधार पर जोर। अतीत की सरकारों ने उनकी बात यदि मानी होती तो आज रामलीला मैदान में अन्ना हजारे को बुढ़ापे में धरना–प्रदर्शन किसानों की आत्महत्या रोकने हेतु न करना पड़ता।

संविधान शिल्पी बाबा साहब डा0 अम्बेडकर की प्रमुख शिक्षायें रू1. समता मूलक समाज स्थापित हेतु जातियों का उन्मूलन 2. समता को महती आवश्यकता मानकर उसी अनुरूप भारतीय संविधान का निर्माण किया। 3. शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करो। 4. हिन्दू धर्म को सुधारा नहीं जा सकता है (तभी बौद्ध धर्म) वैज्ञानिक, धर्म को 14 अक्टूबर 1956 को स्वीकारा एवं दूसरों को प्रेरित किया। 5. अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों के मध्य गठबंधन होना पिछड़े गरीबों के लिए अति आवश्यक है।

अन्त में आपको जीवन से सफलता (स्वास्थ्य, धन, आनन्द) हेतु उपरोक्त शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाने पर जोर देना है एवं दूसरों को प्रेरित करना है ऐसा करके ही भारत महान राष्ट्र बन सकता है।

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

सामाजिक चिंतन (भाग-23)

कुरीतियां छोड़कर आगे बढ़ो

प्रत्येक मनुष्य का परिवार जन्म से मृत्यु और उसके बाद भी ऐसी अनावश्यक, निरर्थक, अंधविश्वास, रूढ़ीवाद, फिजुल खर्ची अशिक्षा, अर्ध शिक्षा, कर्मकाण्ड, धर्मान्धता, कुंसस्कार, भेदभाव, शोषण, अज्ञानता, अंधविश्वास, अंधभक्ति असमानता जैसी कई प्रकार की कुरीतियां के मकड़जाल से बाहर निकल ही नहीं पा रहा है। यहां तक अनेक शिक्षित व्यक्ति एवं परिवार भी कुरीतियों को कम करने या छोड़ने हेतु तैयार ही नहीं हो पा रहे हैं। परम्परा के नाम पर उलझन से बाहर निकल ही नहीं पा रहे है। अपनी शान शोकत मान सम्मान के नाम पर ये कुरीतिंयां से बाहर ही नहीं आ पाते हैं। ऐसे परिवेश में जो भी जितनी भी समझ रखता है उसे वास्तविकता को तो समझना ही चाहिए और अपना अपने परिवार व आने वाली पीढ़ी को सुसभ्य, विज्ञानवादी चिन्तन का नागरिक बनने हेतु कुछ कुरितियां त्याग देने हेतु तत्पर रहना होगा तभी व्यक्ति उसका परिवार उसका समाज सुधार की दिशा में सफल हो पायेगा।

हम सब प्रायः किसी न किसी कुरीति के शिकार है, इसी कारण कोई विज्ञानवादी समझ रखने हेतु तत्पर नहीं हो पा रहे है। फिर समाज में अपनी झूठी शान बनाये रखने हेतु अवैज्ञानिक बनकर कुरितियां पर चलाने पर मजबूर भी रहते हैं। वैसे प्रायः कुरितियों पर उपदेश तो प्रायः सभी देते रहते है समाज सुधार की बात करते रहते है, इस हेतु अपना समय एवं पैसा भी बर्बाद करने हेतु तत्पर रहते है। खुद स्वंय कुरीति छोड़ने की इच्छा रखते हुए भी नहीं छोड़ पाने का मूल कारण ही अज्ञानता एवं झूठी शान शोकत, क्षणिक इज्जत बचाने हेतु शिक्षित अर्धशिक्षित अशिक्षित एक समान ही कुरितियों अपनाकर उन्नति से पिछड़े रहे है।

सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले ने इस बुराई के मर्म को स्वंय भोगा एवं समझा और इन कुरितियों को मिटाने हेतु ज्ञान का प्रकाश जलाकर मानव को सुखी जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर गये। वे अनपढ़ परिवार में पैदा होकर स्वय शिक्षित हुऐअपनी अशिक्षित पत्नि सावित्रीबाई को शिक्षित किया प्रशिक्षित किया और दुनिया को समाज विज्ञान की ऐसी पहल कर गये, जिन्हें समझ कर उन पर चलकर अपने समाज का, अपने राष्ट्र का नाम रोशन कर सकते है। केवल प्रत्येक मानव को विज्ञानवादी चिन्तन कर अपने आपको तैयार करना पड़ेगा। फिर देखिए आपका आपके परिवारजनों का आपके समाज का आपके राष्ट्र का तेजी से उत्थान होने लगेगा।

वैसे प्रत्येक मानव जन्म पाकर अपना सुखमय जीवन जीना चाहता है, किन्तु उसको ऐसा परिवेश मिलता ही नहीं है। खासकर हमारे देश में सभी दिशा में अंधेरा ही अंधेरा है, बिना किसी प्रयोजन के अंधविश्वास में अपना अपने परिवार व अपनी धन सम्पत्ति को फिजुल में व्यय करने व समय बर्बाद करने हेतु मजबूर है। फिर इस मकड़जाल से निकलना तो होगा ही और कुछ करना भी पड़ेगा। अपना मत चिन्तन मजबूत बनाकर स्वंय शिक्षित होने परिवारजनों को शिक्षित करके दुनिया के बदलाव में कूदना होगा। शिक्षित व्यक्ति कभी ठोकर नहीं खा सकता, उसे बस कुरितियां पर चिन्तन करना होगा, और उन्हें ठोक बजाकर समझना होगा तभी उन्नति की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

हम भुक्तभोगी है, हमारे परिवार का हमारे समाज का, हमारे नातेदार–रिश्तेदार के परिवारों में से गिनती के व्यक्ति भारतीय प्रशासनिक सेवा में आ पाये होगें नही तो अपनी परम्परागत खेती बाढ़ी मेहनत–मजदूरी छोटी सी नौकरी, छोटा सा व्यवसाय करके केवल जीवन यापन करने लायक ही बन सके है। आजादी के बाद इतने वर्षों में हम पूर्ण साक्षर ही नहीं है। बड़ा अफसर नहीं बना सके है, फिर आई.ए.एस.ध आई.पी.एस. की बात ही छोड़े कोई लाखों में एक ही ऐसा व्यक्ति मिलेगा। इसका कारण भी समझना होगा और इसकी कमी को अपने आप ढूंढ कर चुनौति स्वीकार कर पढ़ना पढ़ाना होगा ही । तभी उन्नति कर सकेंगे।

हां हम तो राजनीति की भी बहुत बाते करते रहते है, कि हम तो देश में 10 प्रतिशत से अधिक है, फिर अपने समाज की इतनी बढ़ी जनसंख्या के बाद भी हमारे समाज का सरपंच, पार्षद, विधायक, सांसद मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, राष्ट्रपति ही नहीं बन रहे हैं, क्योंकि हमारे समाज को राजनैतिक पार्टियां टिकिट (उम्मीद्वार) ही नहीं देती है। फिर आपकी इतनी बड़ी जनसंख्या के बाद आपकी अनेक संस्था संगठनों, राजनैतिक पार्टियों में बंटे हुए है, एक मत होकर मतदान करना ही नहीं सीख पा रहे है, अपनी धनशक्ति के बल पर अपनी एकजूटता बनाकर अपने मत की पहचान कराकर आप किसी भी पद को पा सकते है, पद पाकर समाज का भला भी कर सकते है। सोंचिये कुछ तो सोचिएँ । चिंतन करिये ओर समाज का उत्थान करने में सहभोगी बनिये।

हमें आगे बढ़ना है तो किसी न किसी को मुखिया मानना होगा उसके आदेश पर चलना होगा। अनुशासन बनाना होगा। अपने बच्चों को शिक्षित प्रशिक्षित उच्चशिक्षित करना होगा। व्यापार उद्योग धन्धा करना होगा। सामूहिक परस्पर सहकारिता साख संस्था बनाना होगा। एक दुसरे की परस्पर सहायता करना ही होगी। राजनीति में आगे आना होगा। आपसी वैमनस्यता समाप्त कर एकता स्थापित करना होगी। सामाजिक शाखा–उपशाखाओं में भले ही शादी विवाह नहीं करें, किन्तु समाज हित में आपस में मिलकर समझ विकसित करना होगी। समाज के बेसहारा को सहारा देकर आगे बढ़ाना होगा। महिलाओं को सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ाना होगा।

कुरीतियां छोड़कर आगे बढ़ो सफलता तो आपके कदम जरूर चुमेंगी। करिये चिन्तन करिये कुछ तो करिये, नहीं तो पैदा होकर जाने के अलावा कुछ नहीं कर सकेंगे।

रामनारायण चौहान

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096

फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171

E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

सत्यमेव जयते

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।

मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रु. 11000/- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम
2. पिता/पति का नाम
3. जन्म तिथि 4. ब्लड ग्रुप
5. शिक्षा
6. व्यवसाय
7. वोटर कार्ड नं. 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं.
9. आयकर पेन कार्ड नं. 10. आधार कार्ड नं.
11. स्थायी पता

पिन कोड

12. पत्र व्यवहार का पता

पिन कोड

13. फोन/फैक्स नं. 14. मोबाईल नं.
15. ई-मेल

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

आपसी बात

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - मार्च से अप्रैल 2019

- दिल्ली– चौ.इन्द्रराजसिंह सैनी, खुशीराम सैनी, आजादसिंह सैनी, रमेश कुमार सैनी, एड. के.पी.सिंह, मनजीत सिंह सैनी, आर.पी. सैनी।
- उत्तरप्रदेश– इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी (मेरठ),।
- मध्यप्रदेश– जगदीश सैनी (जबलपुर), डॉ. प्रेमलता सैनी, छाया सैनी, आर.डी. माने, गजानंद भाटी जगदीश सोंलकी (भोपाल), लीलाधर धारवे, दिनेश धार्वे, विशाल चौहान, गजानन्द रामी, (उज्जैन), लोकेश वर्मा (महू), यादवलाल चौहान, हरीश गिलने (इन्दौर), सीताराम सुमन (श्योपुर), विनोद मकवाना, एड. केलाश वाघेला। जगदीश माली (भौंरासा) ।
- राजस्थान– हरगोपाल भाटी (झालावाड़), ओ. पी. सैनी, (त्ज्ण्ै), रामेश्वर गेहलोत (जोधपुर),।
- महाराष्ट्र– राजेन्द्र सैनी (मुम्बई), डी.के माली (ठाणे), शिवदास महाजन (पुणे), शंकरराव लिंगे (सोलापुर), ।
- गुजरात / गंगाराम गेहलोत (अहमदाबाद) ।
- छत्तीसगढ़– हरीश पटेल(बालोद), एम.एल.सैनी (रायपुर)।
- बिहार– संजय मालाकार (पटना), मदनभक्त (कटिहार–आरा)गौरी प्रसाद (पहलेजा), मुकेश कुशवाहा, (सीवान)।
- हिमाचल प्रदेश– पी.डी.सैनी (कांगड़ा), ।
- उड़ीसा– अनुदराम पटेल (नुवापाडा) ।
- हरियाणा– बरखा हारोड़, गणेश हारोड़ हेमन्त सैनी (रेवाड़ी)।
- कर्नाटक – एन.एल. नरेन्द्र बाबू (बैंगलोर), भीमाशंकर मालागार (बीजापुर)

बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर जंयति

दिल्ली। संविधान निर्माता बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर की 128 वीं जंयति 14 अप्रैल को राजधानी सहित ग्रामीण अंचलो तक मनाई गई। उनके जन्म स्थल महू (म. प्र.) में प्रदेश ही नहीं देश–विदेश के लोगों ने आकर उनका स्मरण किया।

जगह–जगह डॉ. अम्बेड़कर के जीवन एवं कार्योपर पत्र पत्रिकाओं में विशेषांक प्रकाशित हुए।

From: Pre. Month

A FORGOTTEN LIBERATIOR, THE LIFE AND STRUGGLE OF SAVITRI BAI PHULE

BY:- BRIJ RANJAN MANI & PAMELA SARDAR

After a century of elitist trivialization Mahatma Jotiba Phule (as he is popularly known) belatedly recognized as the father of Indian social revolution. An organic thinker and system builder, he founded the Satyashodhak Samaj (the society of Truthseekers) in 1873, the first grassroots anti-caste organisation, and wrote many subversive books, including the whole structure of hierarchy and oppression; his delineation of knowledge-power nexus; his deconstruction of brahmanic myth-history and attempts to replace it with an alternative reading of the past and present; his subversion of brahmanic religion and scriptures; his highly gendered view of women's oppression and symbiosis between caste and patriarchy; his super exposure of the emergent Hindu-brahmanic nationalism as an extension of obscurantist, self-strengthening movement of the caste elites; and above all, his life-long campaigns for democratisation of education, have been highlighted in some scholarly and popular writings (Keer 1998, Mani 2005).

Savitribai Phule (1831-97), struggled and suffered with her revolutionary husband in an equal measure, but remains obscured due to casteist and sexist negligence. Apart from her identity as Jotirao Phule's wife, she is little known even in academia. Modern India's first woman teacher, a radical exponent of mass and female education, a champion of women's liberation, a pioneer of engaged poetry, a courageous mass leader who took on the forces of caste and patriarchy certainly and her independent identity and contribution. It is indeed a measure of the ruthlessness of elite-controlled knowledge-production that a figure as important as Savitribai Phule fails to find any mention in the history of modern India. This is not to deny the works by Marathi authors such as M G Mali G B Sardar, Hari Narke, and Phulwantabai Zodge who have attempted to highlight her outstanding public life and contribution. Her life and struggle, however, deserves to be appreciated by a wider spectrum, and made known to non-Marthi People as well. This collection of write-ups is a modest attempt in that direction.

Before underlining the significance of her struggle, let us touch upon the uniquely beautiful relationship that the Phule couple shared with each other. What made their match unparalleled, even in public life. She was still a teenager when she started involving herself in educational activities with her husband-playing an equally important role in founding and running schools for women and dalits-in the face of opposition from the orthodoxy whose power and authority she challenged. Savitri was only 18 and Jotirao was 22 years old when they were maligned, ostracized, and finally turned out of their own home by Joti's Father who Feared a high caste backlash for educating dalits and women, traditionally debarred under the brahmanic scheme from the right to education. Just imagine, two young People in love taking on the home and the world not for their romance but for liberating the shackled and the crushed-with a majestic belief that every woman, every child and every man has a right, a divine right, a natural right, to get educated and remake their life. What is more remarkable, they kept alive this revolutionary spirit throughout their lives, setting a benchmark in social and political engagement that has few parallels anywhere.

To Savitibai and Jotirao, the Idea of Justice and fairness, of equality between man and woman seems to have been instinctive. Perhaps, it was more so in the case of Savitribai as she suffered more as a woman. She never needed convincing for the need of an inclusive and compassionate world. She had her conviction already from the start-straight and clear. Does that make her less revolutionary than the latter-day privileged radicals and feminists who have better mastered the dialectics and duality of the human world but struggle to enact their subversive intellectual constructs in their own lives, let alone animating other people's lives?

Savitribai's life and struggle is an excellent answer to the heart cry of Marx, a revolutionary thinker, "Philosophers have only understood the world in various ways; the point, however, is to change it." She did not understand the world in different ways; she understood it in one simple way-the necessity and possibility of making it more humane, more inclusive, more compassionate. What makes her important is that she lived up to this simple understanding in a magnificent way.

Savitribai's role in the anti-caste and women's struggle is unique. She emerges as the only woman leader among all social movements in nineteenth century India who linked Patriarchy with caste. The nineteenth century is celebrated in history textbooks as the century of glorious socio-cultural regeneration led by an array of luminaries such as Rammohun Roy, Dayananda, and Vivekananda. What is not stated is the fact that the Indian Renaissance, confined to the upper echelons of society, was closely intertwined with the hegemonic neo-brahmanic Hinduism and the self-strengthening cultural nationalism. Savitribai Phule, on the other hand, was in the forefront of a socio-cultural struggle that challenged the tendency to focus only on higher social groups- Brahman and allied castes. She encouraged a reversal of traditional subservient roles of women and depressed castes.

Cont. Next Month

फुले दम्पत्ति को भारत रत्न दिये जाने के लिए महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान द्वारा 04 अप्रैल को भेजे गए प्रस्ताव पत्र का प्राप्त उत्तर

Recd 25/4/19

प्रधान मंत्री कार्यालय
Prime Minister's Office

नई दिल्ली- 110011
New Delhi- 110011

Sub:Petition of SHRI RAMNARAYAN CHOUHAN
A-103 TAJ APARTMENT GAZIPUR
NEW DELHI
DELHI-110096

A letter/gist of oral representation dated 04/04/2019 received in this office from SHRI RAMNARAYAN CHOUHAN is forwarded herewith for action as appropriate. Reply may be sent to the Petitioner and a copy of the same may be uploaded on the portal.

राजीव रंजन
[RAJEEV RANJAN KUSHWAHA]
SECTION OFFICER

SECRETARY,MINISTRY OF HOME AFFAIRS

PMO ID No.:PMOPG/D/2019/0138187 Dated: 15/04/2019

Copy for information to :
SHRI RAMNARAYAN CHOUHAN
A-103 TAJ APARTMENT GAZIPUR
NEW DELHI
DELHI-110096

Note:- Status of the grievance can be tracked through internet at https://pgportal.gov.in/status by entering registration no. PMOPG/D/2019/0138187

11 मई जोतीराव फुले को महात्मा की उपाधि दिवस

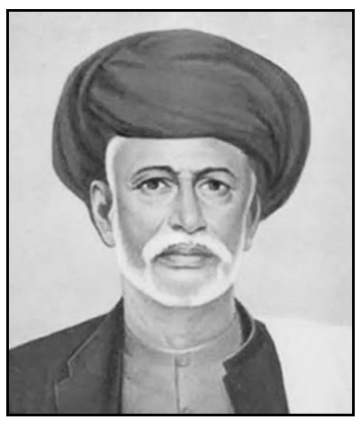

महात्मा की उपाधि - 11 मई 1888 को बम्बई के मांडवी कोलावाडा में जोतीराव का भव्य अभिनन्दन किया, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने जोतीराव के असाधारण धैर्य, त्याग, ध्येय, निष्ठा, समानता समभाव आदि गुणों का वर्णन किया तो कुछ ने कहा "निरन्तर 40 वर्षों तक निःस्वार्थ भाव से जनसेवा करने वाले जोतीराव महाराष्ट्र के आदि पुरुष है, फिर ठसा ठस भरे सभा स्थल पर राय बहादुर श्री विट्ठलराव वंडेकर ने कहा "जोतीराव की उग्र तपस्या के कारण महाराष्ट्र के स्त्री पुरुषों को मानव अधिकारों, जागृति और चेतना की स्थायी धरोहर मिल गई है, इसलिये जोतीराव सच्चे "महात्मा" है, हम सभी उपस्थित जन जोतीराव को स्वस्फूर्ति से महात्मा की उपाधि प्रदान करते हैं इस पर देर तक तालियाँ बजती रही।

जोतीराव ने कहा "यह अल्प-सा कार्य मैंने ईश्वर की प्रेरणा से किया है मैं आज तक यही मानता रहा हूँ कि जनसेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है और आगे भी यही करता रहूंगा।"

आप सभी लोग सत्यशोधक समाज के कार्य में सहायता देकर आगे बढ़ा रहे हैं जिन्हें हजारों वर्षों से शुद्रादिशूद्र समझा जाता रहा है उन्हें मानव अधिकार दिलाने को ही मैं धर्म मानता हूँ, यही हर एक का कर्तव्य है।

मैंने कोई विशेष कार्य नहीं किया है, लेकिन जो कार्य मैंने किया है, वह केवल कर्तव्य समझकर किया है।

जनसमूह ने जय जयकार करते हुए कहा- राजा महाराजाओं के आश्रितों ने उनके अभिनन्दन किये होंगे, धनवानों ने अपने वर्ग के लोगों के अभिनन्दन किये होंगे, विदेशियों के जुए से देश को मुक्त करने के प्रयास करने वालों का शिक्षितों द्वारा अभिनन्दन किया होगा, लेकिन दीन-दरिद्रों, शोषित मजदूरों, केवल पेट की आग बुझाने के लिये जीने वालों तथा अज्ञान की दलदल में फंसे हुए स्त्री-पुरुषों द्वारा अभिनन्दन पाने वाले महापुरुष और नेता महात्मा जोतीराव फुले ही हैं।

जोतीराव के बाद "महात्मा" की उपाधि पाने वाले दूसरे जननेता महात्मा गांधी है।

देश भर के समाचार

● गुरूग्राम (हरि):– रूस में 7 से 11 अप्रैल तक खेली जाने वाली 11वीं अन्तर्राष्ट्रीय मुक्केबाज भूषण सैनी को टीम का प्रशिक्षक चुना गया। बधाई।

● गजियाबाद (उ.प्र.)– महात्मा जोतिरावफुले का 192 वां जन्म दिवस पर हिन्दी भवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम चित्रकला प्रतियोगिता, सामान्यज्ञान, प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, स्मारिका प्रकाशन युवक युवति परिचय सम्मेलन 7 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष विमल कुमार उपाध्यक्ष विष्णु दयाल वर्मा चमनसिंह सैनी सीमा कुशवाह विशम्भर सैनी उदयभान शाक्य ने उक्त जानकारी दी।

● रोहतक (हरि.)– राइफल भूटर काजल सैनी का चयन भारतीय टीम में होने पर बधाई।

● सहारनपुर(उ.प्र.)– जे. डी. कौशल सैनी परिवार की बेटी अपूर्वी सैनी रूबरू फेस ऑफ इन्टरनेशनल इंडिया 2019 का खिताब जीता। अब वह फिलीपींस में ताज जीतने की तैयारी कर रही है।

● मुम्बई (महा.)– धुले की मंगला ताई रोकड़े को इंडियन आईकान अवार्ड साहित्य लेखन के क्षेत्र में 7 अप्रैल को परेल में आयोजीत समारोह में मिला । बधाई।

● रेवाड़ी(हरि.)– 11 अप्रैल महात्मा जोतीराव फुले की 192 वीं जुयति कवर सिंह सैनी शिवपाल सैनी आदि के अतिथ्य में मनाई।

● होशंगाबाद(म.प्र.)– 12 अप्रैल को महात्मा फुले जंयति के अवसर पर ब्रजमोहन सैनी ने 75: से अधिक अंक हायर सेकेण्डरी लाने वाले विद्यार्थियों को शील्ड एवं चांदी का मेडल दिल्ली के बी. आर. सैनी ने निशुल्क ट्रेनिंग देने की घोषणा की अध्यक्ष अजय सैनी ने आभार प्रकट किया ।

● जयपुर – राजस्थान विधान सभा सचिवालय मंत्रलायीन कर्मचारी संघ के कोषाध्यक्ष शान्तिकुमार सैनी दुसरी बार चुने जाने पर बधाई।

● बरेली(उप्र.)–महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड युनिवर्सिटी से राममुर्ति मेडिकल कालेज की डा. प्रसाद एम. बी.बी.एस. की डिग्री लेने पर बधाई।

● सोलापुर (महा.)– 5 मई को वर–वधु सम्मेलन अ.भा. माली महासंघ द्वारा

● नागपूर (महा.)– 7 अप्रैल को युवक–युवति परिचय सम्मेलन में सड़क परिवहन मंत्री नीतिन गड़करी पूर्व न्यायमूर्ति किशोर रोही एड. अविनाश गोरडे, विधायक अशोक मानकर प्रा. अरूण पंवार, वैराले आदि अतिथियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

● फरीदाबाद (हरि.)– अखिल भारतीय मौर्य महासभा द्वारा 7 अप्रैल को डॉ. आशिष मौर्य द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पवन कुमार सैनी संस्थापक नरेश सैनी कलानौर, मुकेश सैनी, राजेश सैनी ने सम्बोधित किया।

● अलवर (राज.)– अलवर जिला सैनी महासभा के अध्यक्ष पूर्णमल सैनी उपाध्यक्ष भगवत प्रसाद बायलाणा महामंत्री लक्ष्मण सिंह सैनी कोषाध्यक्ष सीताराम सैनी मंत्री सूबेदार, हरभजनसिंह सैनी, संगठन मंत्री, बाबूलाल सैनी प्रचार मंत्री कृष्ण कुमार सैनी चुने गये।

● जयपुर (राज.)– दीपाषा सैनी ने बोर्ड परीक्षा में मेरिट में 12 वां स्थान पाया, इनके पिता सब्जी का व्यवसाय करते है व बेटी को शिक्षित करने में अपना ऊंचा स्थान बनाया। बधाई।

● मन्दसौर (म.प्र.)– सीतामऊ तहसील के ग्राम नाटा राम में राष्ट्रीय फुले बिग्रेड द्वारा महात्मा फुले के आदर्शों को अपनाने का आयोजित सभा में संकल्प लिया ।

● गुरूग्राम– पाटोदी में छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए काउंसलिंग क्लास ऑल इंडिया सैने सेवा समाज ने लगाई। उक्त जानकारी राजकुमार सैनी ने दी।

● बाबेन (हरि.)– सावित्रीबाई फुले स्कूल में आर.जे.एस. द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु चौ. इन्द्रराज सिंह सैनी राजेन्द्र कुमार सैनी, उदयकुमार मन्ना द्वारा आयोजित कार्यक्रम में शिक्षा का महत्व बताया।

● चण्डीगढ़– महात्मा फुले जंयति पर पूर्व सासंद चरणजीतसिंह चन्नी, हरभजनसिंह सैनी की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में विचार प्रकट करते हुए, उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

● सारंगपुर (मप्र.)– फुल माली समाज द्वारा 26 अप्रैल को 51 जोड़ो का सामूहिक विवाह हुआ। ओम पुष्पद, लोकेश पुष्पद राजेश पुष्पद भेरूलाल पुष्पद आदि ने सफल आयोजन के लिए आभार प्रकट किया।

● बिलासपुर(छग.)– 26 अप्रैल कोजगदीश सैनी राष्ट्रीय अध्यक्ष से भारती नीरज माली पिन्टूसिंह सैनी लक्ष्मी सैनी, संजीता माली, पिंकल माली, नारायण प्रसाद सैनी आदि ने भेंट की ।

● नसिक (महा.)– 5मई को परशुराम साई खेड़कर नाट्यगृह शालिमार में 16वाँ माली समाज वधु वर मेलावा एवं पुस्तिका का प्रकाशन विनोद नाईक एवं महेश नाईक द्वारा।

● सहारनपुर (उप्र.)– ज्योतिबा फुले चौक गागलहेडी का पुर्ननिमार्ण भागीरथ सैना के प्रयासों सफल हुआ। एड. अभय सैनी एवं सोनु सैनी को बधाई।

● उज्जैन (मप्र.)– 7 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज धर्मशाला में आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● देवास (मप्र.)– 7 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज धर्मशाला में आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● हरसोला (मप्र.)– 7 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज धर्मशाला में सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● भोपाल (मप्र.)– फूलमाली समाज द्वारा 7 मई को सामूहिक विवाह सम्मेलन।

संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

महात्मा ज्योतिराव फुले सामाजिक क्रांति के प्रणेता

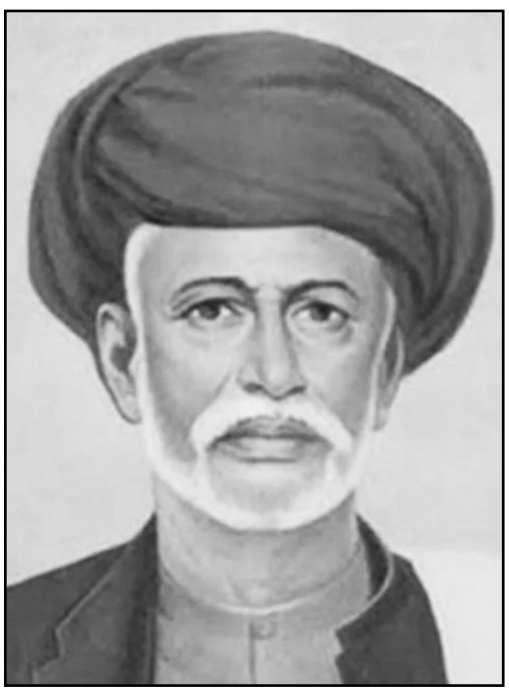

मध्यकालीन भारत में कल्पना से भी ज्यादा अंधकार युग था। ऐसे घोर अंधकारमय काल में 11 अप्रैल 1827 को पुणे (महाराष्ट्र) में महात्मा ज्योतिराव फुले का जन्म ज्ञान के उदय की भांति हुआ। यह वही समय था, जब किसान ने एक बार साहूकार से कर्ज लिया, तो किसान चक्रवृद्धि ब्याज के चक्कर में साहूकार का दास बनकर रह जाता था। किसान क्या किसान की औलादें भी साहूकारों के बंधुआ मजदूर बन जाती थीं। ब्राह्मण जाति में पैदा हुआ व्यक्ति भले ही वेद की लाईन न जानता हो, मगर चर्तुवेदी कहलाता थाउस समय सबसे बुरी हालात महिलाओं, शूद्रों–अतिशुद्रों की थी, आज जिन्हें हम पिछड़ा वर्ग व अनुसूचित वर्ग कहते हैं। महात्मा फुले माली जाति से सम्बन्धित थे, जो तब शुद्र कहे जाते थे। शुद्रों को मन्दिर में जाकर पूजा–अर्चना करने की अनुमति नहीं थीशुद्र मन्दिर से दूर खड़ा होकर केवल मन्दिर के कलश को देखकर प्रणाम कर सकते थे। शुद्रों को पढ़ने लिखने का भी अधिकार नहीं था। शुद्रों का केवल एक ही धर्म था, जीवन भर मरते दम तक सवर्णो की सेवा करना। शुद्र पीढ़ी दर पीढ़ी लगातार उसी चक्र में फंसे रहे, इसके लिए ब्राह्मणों ने बड़ी साजिश रची हुई थी। स्वयं तुलसीदास जी द्वारा रामचरित मानस में लिखा श्लोक

ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।

और पूजिये विप्र शील गुण हीना, नहीं शुद्र गुण, ज्ञान प्रवीणा ध

का कड़ाई से पालन होता था। निर्विवाद रूप से भारत में वह घौर अंधकार युग था। हर तरफ अंधकार ही अंधकार फैला हुआ था। ऐसे समय में सामाजिक क्रांति के प्रेणता महात्मा ज्योतिराव फुले को बचपन से ही संघर्ष करना पड़ा। जन्म से कुछ महीने बाद ही उनकी माँ चिमणाबाई का साया उनके सिर से उठ गया था। इसलिए पिता गोविन्दराव जी ने अपने दोनों बेटों को अपनी मोसेरी बहन सगुणाबाई के द्वारा लालन–पालन करवाया। शिक्षा प्राप्त करने में महात्मा फूले को ब्राह्मणों के अवरोध का सामना करना पड़ा। शिक्षा प्राप्त करते समय 21 वर्ष की आयु होने पर ज्योतिराव फुले जिस जातिवाद को देखते आ रहे थे, उस पुरातन जाति व्यवस्था का दंश उन्हें झेलना पड़ा। जीवन में घटित घटनाओं के विश्लेषण से ही व्यक्ति के दृष्टिकोण का अहसास हो जाता है। ब्राह्मण दोस्त की शादी में एक घटना घटी, जिसमें महात्मा फुले को केवल शुद्र होने के कारण ब्राह्मण दोस्त की शादी से धक्के देकर भगा दिया और सरेआम शूद्र कहकर अपमानित किया।

बारात में अपमान होने पर उस कम उम्र में उन्हें कितना गहरा आघात लगा होगा, वह कल्पना से बाहर है। उसी आघात के कारण ही अपमान के अहसास से ही अस्मिता का सघंर्ष शुरु हुआ और महात्मा ज्योतिराव फुले ने भारत के प्राचीन इतिहास का गहनता से अध्ययन किया और वर्तमान में प्रस्थापित वर्ण व्यवस्था का बहुत ही तार्किक ढंग से विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला

विद्या बिना मति गई। मति बिना नीति गई। नीति बिना गति गई। गति बिना वित्त गया। वित्त बिना शूद्र टूट गया। एक विद्या के कारण इतना बड़ा अनर्थ हुआ ध

महात्मा फुले ने छत्रपति शिवाजी महाराज को अपना प्रेरणा स्त्रोत माना और उनकी समाधि स्थल को खोज निकाला तथा शिव जयंती की शुरुआत की। उसी समय सन् 1848 में अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले के सहयोग से भारत में पहली कन्या पाठशाला शुरु की। सावित्रीबाई फुले को देश की पहली महिला अध्यापिका होने का गौरव प्राप्त हुआ। ज्योतिराव फुले ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए क्रान्ति के पथ पर ग्रह त्याग भी कियाग्रह त्याग करने में वे ब्राह्मणों के षड़यंत्र का शिकार बने। ब्राह्मणों के लगातार विरोध के बाद भी ज्योतिरावफुले लगातार अपने उद्देश्यों शिक्षा, नारी उत्थान, किसानों का सहयोग, विधवा उत्थान, विधवा मुण्डन का विरोध, छूआछूत पर करारी चोट व अंधे ज–धार्मिकता पर प्रहार करते रहे। ज्योतिराव फुले जी को सन् 1888 में महात्मा की उपाधि मिली तथा सत्यशोधक समाज की स्थापना कर नये समाज का निर्माण किया।

27 नवम्बर 1890 को लकवा होने की वजह से उनकी हालत खराब हो गई और भारत में वास्तविक ज्योति नाम के अनुरूप महान विचारक, क्रान्तिकारी समाज सुधारक लेखक मुक्तिदाता पंचतत्व में विलीन हो गये।

रामचरित मानस में लिखा श्लोव
ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, और पूजिये
विप्र शील का कड़ाई से पालन होता था।
फैला हुआ था। ऐसे समय में सा जन्म से कछ महीने

श्रीचन्द्र सैनी
संपादक : सैनी मोर्चा
सहसंपादक : शिक्षा ईशारा
330, ब्रह्मपुरी शारदा रोड, मेरठ
मो. 9760899766